बमौक़ए

जश्ने सद साला

30 नवम्बर व
01 दिसम्बर
2024

हज़रत मोहसिने मिल्लत की छत्तीसगढ़ में

तालीमी ख़िदमात

मुरत्तिबः जानशीने मोहसिने मिल्लत पीरे तरीक़त, हज़रत मुफ़्ती **मोहम्मद अली फ़ारूक़ी** क़ाज़िए शहर रायपुर

मोहतमिम

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा
बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.)

चेयरमेन

जामेअतुल इस्लाह मोहसिने मिल्लत यूनिवर्सिटी
रायपुर (छ.ग.)

मोहसिने मिल्लत एकेडमी

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा
बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.)

www.mohsinemillat.com
Email:-m_a_farooqui786@yahoo.com
Mob. No. 09425231208
Phone No:-0771-2535283

मुकद्दमा

कितनी मुकद्दस व मुबरक थी वो घड़ी जब हज़रत मोहसिने मिल्लत एक नव वारिद की तरह छत्तीसगढ़ के मर्कज़ी शहर रायपुर में तशरीफ लाए। न कोई साथी संघी न कोई जानकार और न ही कोई पहचानने वाला। खुदा के एक खामोश इशारे पर रायपुर में नववारिद की तरह तशरीफ लाए। दिन का उजाला हो या रात का अंघेरा। जिस तरफ नज़र डालते अजनबियत ही अजनबियत का एहसास होता।

खुदा पर भरोसा करके आप ने अपना बिस्तर बोरिया समेटा और तबलीगे इस्लाम के खातिर चल पड़े। जो मिलता उसे इस्लाम की तबलीग करते, जिस पर नज़र पड़ती उसे दीन व सुन्नियत की नसीहत करते। जिससे मुलाक़ात होती। उसे इस्लामी पैग़ाम सुनाते। गर्ज़ कि हर तरफ अंघेरा ही अंघेरा था। उस अंघेरा में दीन व इस्लाम का चिराग़ बनकर इस्लाम का पैग़ाम देते। धीरे–धीरे इस्लाम का उजाला बढ़ने लगा। हक़ीकत का दायर फैलने गला। तारीकियों के परस्तार सिमिटने लगा। इश्क वो इर्फान का गुलशन मुस्कुराने लगा।

हर तरफ आपकी विलायत और करामतों का शोर गुजने लगा। शुरू शुरू में हर जगह मुसीबतों के पहाड़ दिखाई देते। परेशानियों का तूफान नज़र आता, बलाओं का घोर दिखाई देता। मगर आप खुदा की जात पर भरोसा करके निकले थे। राहों के पत्थरों ने सलामी दी, गुज़रते हुए पखंडडियों ने बर्कतें हासिल की, रास्ते में खड़े कांटों ने दुआऐं ली और हर मुसीबत से टकराते कांटो से उलझते, मुसीबतों को झेलते आप आगे ही आगे बढ़ते गए। धीरे ध ीरे आप के गिर्द मोहब्बतों का दाएरा बढ़ने लगा। परेशानियों का दाएरा घटने लगा और फिर दुनिया ने देखा कि आप के

अजम वो हौसले का सामने सारी परेशानियत टुट कर बिखर गई और देखते ही देखते मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन की फलक बोस और गगन चुम्बी इमारत मुस्कुराने लगी। जहां मुसीबतजदों को सहारा मिलने लगा, यतीमों को सरपरस्ती मिलने लगी गरीबों को ज़िन्दगी गुज़ारने का सलीका मिलने लगा। जगह जगह इल्म दीन का चिराग जलने लगा।

जहालत की तारीकियां दम तोड़ने लगी। इल्म दीन का फैज़ान उबलने लगा।

मगर यहां तक पहुंचने में कितनी परेशानियों के तूफान से गुज़रना पड़ा, मुसीबतों के पहाड़ से टकराना पड़ा। यहां एक दर्दनाक कहानी है।

हज़रत मोहसिने मिल्लत इस्लाम के दुसरे खलीफा हज़रत फारूके आज़म की औलाद थे। हज़रत बाबा फरीद शकर गंज के शाहज़ादे थे। वलियों के गोद में पले थे। इसलिये जलाले फारूकी और फैजाने फरीदी लेकर आगे बढ़े और एक नई तारीख बनाकर चले गए।

आज उन्हें गए हुए तकरीबन 46,47 साल हो गए। जिन्होंने उन्हें देखा था। अब वो भी दुनियां से चल बसे। जिन्होंने उनका फैज हासिल किया था। अब वोह भी दुनिया से रूखसत हो रहा है।

आज उनके मदरसे को फैज़ बरसाते और इल्म दीन का चिराग जलते हुए सौ साल हो गए। अब जबकि हम जशने सौ साला मना रहे हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि उनके लगाए हुए दरख्त को, उनके बसाए हुए इस इल्मी शहर को उजड़ने से बचाऐं।

आज जश्न सौ साला में हमें इसी पर फिक्र करना है और इसी पहलू पर गौर करना है।

यह है दामन येह के गेराबा आओ कुछ काम करें।
मौसम का मुंह तकते रहना काम नहीं दीवानों का।

फकद खुलूसकार
मोहम्मद अली फारूकी
चेयरमेन जशने सदसाला रायपुर (छ.ग.)

एक चिरागे रहबरी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।

मौलाना एजाज़ कामठी

1. एक चिरागे रहबरी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।
   रौशनी ही रौशनी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
2. नाम है हामिद अली, हां नाम है हामिद अली।
   हामिदे आले नबी हैं मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
3. निस्बते ख्वाज़ा की सूरत साफ आती है नज़र।
   गोया आईना बनी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
4. निस्बते ग़ौसुल वरा और निस्बते ख्वाज़ा पिया।
   आज भी दम भर रही है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
5. वारसी फारूकी इरफानी द वसीले की दकसम।
   दामने हुब्बे अली है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
6. ज़ख्म खुदा कौमों मिल्लत को ये देते हैं करार।
   गोया मरहम बन चुकी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।
7. रिज़्वी मैखाने की एजाज कैफियत है गवाह।

   मस्त जामे बेखुदी है मोहसिने मिल्लत की ज़ात।।

मदीना से छत्तीसगढ़

खज़ाना कौन सा , किसने , हेरा से बांटा था ।
ज़मीन के चप्पा–चप्पा ने ले लिये दस्ते गदा बनकर।।

पैगम्बरे ईस्लाम हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम) के द्वारा लाए गए क्रांतिकारी इतिहास को देखकर प्रोफेसर फिल्म हिट्टी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक, हिस्टरी आफ अरब, में लिखते हैं

After the death of prophet slerik arabic seems to have been converted as if magic in to a nursery of herose the like of whome both in numbur and qality is hard to find any where

(p,k,hette-history of arabs 1979 p,no,42)

पैगम्बरे ईस्लाम की वफात के बाद ऐसा मालूम होता था जैसे अरब की बंजर ज़मीन जादू के ज़रीये हिरो की नर्सरी में बदल गई हो। ऐसे गर्वशाली व्यक्ति जिन का विकल्प असंख्य व्यक्ति में कहीं भी पाना असंभव है।

इतिहास का साधारण विद्यार्थी भी इससे पूरी तरह सहमत है कि खुदा के आख्री पैगम्बर रसूले पाक (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) का मधुर और क्रांतिकारी संदेश अचानक एक नये इतिहास का जन्मदाता बन गया। आप के मानने वाले प्रेम, मोहब्बत एकता और समानता का संदेश लेकर अरब से चले तो हृदय को सुगंधित करने सुबह की पवित्र पवन की तरह जिधर से गुज़रे धरती महकने लगी। आत्मा सुगंधित हो उठी। मानवता मुस्कुरा पड़ी मनुष्य का सिर गर्व सउपर उठने लगा और उसे लगने लगा कि वो संसार में सबसे सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। ईस्लाम द्वारा उसे मालूम हुआ कि सारा संसार उसके लिए रचा गया है किंतु वो केवल

संसार के रचयिता के लिए है। यह महान संदेश लेकर वो सारे संसार में फैल गये। देखते ही देखते एक तरफ शाम, इराक़,ईरान, अफगानिस्तान; सिंध और चीन से गुज़र कर वो पूर्वी साइबेरिया तक पहुंच गए तो दूसरी तरफ़ मिश्र और अफीका से भी आगे स्पेन और फांस भी उनके कोमल चरणों से गर्वांचित हो उठा।

कहीं व्यापारी के रूप में तो कहीं मुजाहिदे ईस्लाम कहीं व्यापारी के रूप में तो कहीं मुजाहिदे ईस्लाम बनकर वो पहुंचे। लोग उनके रहन सहन,उनकी सच्चाई, उनकी ईमानदारी और उनके खुलूसो मोहब्बत को देखते और उन पर श्रध्दा के फूल अर्पित करने लगते। वो जहां गए वहीं ह्रदय सम्राट बनकर छा गए। जहां पहुंचे पूरा क्षेत्र उनके पवित्र के प्रकाश में होने लगा। जिस जगह उतरे शहर का शहर उनकी ईमानदारी और उनकी सच्चाई से महेकने लगा। उनकी महानता और श्रेष्टा से जहां संसार के विभिन्न भागों में ईस्लाम की आकाश गंगा मुस्कुराई वहीं भारत की धरती का सीना भी जगमगाने लगा।

भारत में इस्लामः—कहा जाता है कि भारत में सबसे पहले 93 हि, (711 ई,) में मोहम्मद बिन कासिम के ज़रिये, ईस्लाम उस समय आया जब उन्होंने राजा दाहिर के अत्याचारों से लोगों को मुक्ति दिलाने और उन मुस्लिम औरतों को लुटेरों से छुटकारा दिलाने जिन्हें सिंध के लुटेरों ने लूट लिया था। भारत में प्रवेश किया था। जबकि इतिहास का कहना है कि उन से भी पहले ही पूर्णिमा का चांद को लजवान्त करने वाले इस्लामी प्रकाश से यहां की धरती प्रकाशित हो चुकी थी। बल्कि इतिहास तो यहां तक बताता है कि संदान, थाना भड़ौच में तो हिजरत के पंद्रहवें साल मेंही ईस्लाम पहुंच चुका था। सय्यदना फारूक़े आज़म के दौरे हुकूमत में बहरैन

के गवर्नर उस्मान बिन अबिल आस सक़्फी ने अपने भाई हकम बिन अबिल आस को थाना औरम भड़ौच भेजा। जिससे दौरे फारूक़ी ही में इस्लाम के मधुर प्रकाश से भारत का स्वभाग जगमगा उठा।

एक रेवायत से तो यह भी पता चलता है कि भारत के राजाओं ने खुदा के आखरी पैगंबर रसूले पाक सल्ललाहो तआला अलैहि वसल्लम के पवित्र संदेश से प्रभावित हो कर उनकी बारगाह में उपहार भी भेजा था। मशहूर सहाबिए रसूल हज़रत अबू सईद खुदरी फरमाते हैं कि –हिंदुस्तान के राजा ने रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की खिदमत में जंजबील (एक खुशबूदार चीज़) का एक घड़ा भेजा/ आपने सहाबए केराम को उस का एक –एक टुकड़ा दिया और मुझे भी उसका एक टुकड़ा खिलाया। (अलमुस्तदरक लिल हाकिम) अल्फाज़ यह हैं।

اھدیٰ ملک الھند الی رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم جرۃ فیھا زنجیل فاطمعہ اصحابہ قطعۃ قطعۃ و اطعمنی منھا قطعۃ (المستدرک۔امام ابوعبداللہ الحاکم عن ابی سعید خدری)

(तफसील के लिये देखे हिन्दुस्तान में
अरबीहुकूमत सफा 25 फतहुल बुलदान सफा
42 तारिख़े इब्ने खुलदून जिल्द 2 सफा 124)

हिन्दुस्तान में मुसलमानों की आमद के तअल्लुक से मशहूर मुसन्निफ हज़रत मौलाना यासीन अख्तर मिस्बाही अपनी मशहूर किताब' सादे आज़म' में लिखते हैं कि हज़रत राफे और हजरत रेफाआ रदेअल्लाहो तआला अन्हुमा जो अस्हाबे बदर (इस्लाम की पहली जंग में शामिल होने वाले) में से हैं वो

सब से पहले हिन्दुस्तान तशरीफ लाए। मौलाना यासीन अख्तर मिस्बाही ने हज़रत अबू मोहम्मद वैलसौरी के हवाले से लिखा है कि वो कहते हैं कि मुझे बाज़ सेकाह (कुछ महान व्यक्तियों) ने खबर दी कि काली कट में कदीम मस्जिद की तरह ईमारत के सामने मस्जिद पर एक तख्ती आवेजां (लटकी हुई) थी जिस पर लिखा था।

ان بناءذالک للعبد سنۃ ثنتین وعشرین من الہجرۃ

इस मस्जिद की तामीर 22 हिजरी में हुई। रावी (बताने वाले) ने कहा है कि मैंने उसको पढ़ा है जिस में तारीख ; बवैद ; (22) नविश्ता (लिखी) थी। रावी ने मजीद कहा कि यह भी बयान किया जाता है कि हज़रत राफे और रेफाआ रदेअल्लाहो तआला अन्हुमा अस्हाबे बदर की कब्ररें भी इस मस्जिद में है। (अल अदिल्लतिल कवाते)

इस वाकेआ से पता चलता है कि भारत से मुसलमानों का कितना क़रीबी रिश्ता है और वो इस देश से कैसा अटूट संबंध रखतें हैं। मशहूर सहाबी हज़रत अबू हुरैरा रदेअल्लाहो तआला अन्हो तो हमेशा अपने दिल में यहां आने की तमन्ना रखते थे जैसा कि हदीस की मशहूर किताब सुस्नदे अहमद और नसई ने बाबा गज़वतुल हिन्द में आप की यह रिवायत दर्ज

عن ابی ھریرہ قال وعدنا رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم غزوۃ الھند فان ادرکتھا انفق فیھا نفسی ومالی فان اقتل کنت افضل الشھداء وان ارجع فانا ابوھریرۃ المحرر

(بحوالہ مسند احمد وسنن نسائی۔ باب غزوۃ الھند)

हज़रत अबू हुरैरा रदेअल्लाहो तआला अन्हो से रसुलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गज़्व ए हिन्द का वादा फरमाया अगर मैं उसमें शरीक हो सका तो अपनी जान वो माल कुर्बान करूंगा अगर मैं उसमें काम आ गया तो बेहतरीन शहीद हो जाऊं। और अगर वापिस लौटा तो नारे जहन्नम से आजाद हो

जाऊं।

इसीलिए भारत में सहाब ए केराम के बाद एक बड़ी तादाद में ताबेईने केराम (जिन्होंने सहाब ए केराम का फैज़ हासिल किया) तशरीफ लाए जिन्होंने इस सरज़मीन को इस्लाम का पूर्णिमा के चांद को लजवांत करने वाला पवित्र संदेश पूरे क्षेत्र में फैल गया। ह्रदय को नया जीवन देने वाला अमृत संदेश से हजा़रों व्यक्तियों ने नया जीवन पाया और उसके कांतिकारी शिक्षा ने एक नया संसार रचा।

इस सिलसिले में चार मर्ज़ज़ काबिले ज़िक्र हैं जिन्होंने एक नया इतिहास बनाया।

पहला मर्कज़ :–श्रीलंका जिसे इतिहास में सरंदीप के नाम से भी जाना जाता है उन लोगों को जब रसूले पाक के बारे में खबर मिली तो उन्होंने मालूमात के लिए लोगों को भेजा, वो जब वहां पहुंचे तो सय्यदना फारूक़े आज़म का दौरे खिलाफत था। उनका दबदबा पूरे ईराक़, ईरान, शाम, अफ्रीक़ा और चीन तक छाया हुआ था जब यह लोग वहां पहुंचे तो यह देख कर हैरत में पड़ गये कि ऐसा अमीरूल मोमेनीन जिस के नाम से चीन, रूस और ईरान के बादशाह कांप रहे हों वो ऐसा सादा जिन्दगी गुज़ार रहा है कि एक गरीब़ प्रजा और राजा में फर्क करना मुश्किल हो गया जिस से वो बड़े प्रभावित हुए।आते वक्त रास्ते में ब्लूचिस्तान के पास जब वो मरे तो उस का हिन्दू नौकर जो उनके साथ था वो जब अपने देश श्रीलंका पहुंचा और लोगों को उसने वहां के हालात बताए तो लोग चकित रह गए। मुसलमानों की सादगी, उनकी मोहब्बत , उनका तफसीलात आज भी देखी जा सकती है।

दूसरा मर्कज़ :– जज़ीर ए मालदीप जिसे लक्षद्वीप भी कहते है। अरब वाले उसे जज़ीरतुल महल के नाम से भी पुकारते हैं। सुलेमान मोहम्मद तुगलक (1325

ई .ता, 1351 ई.) के ज़माने में यह जज़ीरा पूरा मुसलमान था। जहां एक बंगाली खातून सुल्तान खदीजा हुकमरान थी।

कहा जाता है कि लक्षदीप में एक बहुत बड़ी बला समुंद्र से देव की शकल में आती थी जो भेंट के रूप में एक खूबसूरत कुंवारी लड़की ले जाती थी लेकिन मुराको के एक अरब शेख अबूल बरकात बरबरी मगरबी जो इत्तिफाक़ से वहां आ गए थे उनकी दुआओं की बरकत से मुल्क वालों को छुटकारा मिला। जिससे राजा समेत सारे लोग मुसलमान हो गए। इब्ने बतूला के मुताबिक़ राजा ने इस्लाम कुबूल करने के बाद वहां मस्जिद बनवाया जिसके मेहराब पर लिखा था। सुल्तान अहमद शनू राजा अबुल बरकात मगरबी के हाथ मुसलमान हुआ।

तीसरा मर्कज़:—कारो मंडल का इलाका है जो मद्रास के पास है। जिसे अरब वाले मोअब्बर कहते हैं। जहां अरब ताजिरों और बुजुर्गों के ज़रिए इस्लाम पुंहचा। ऊंच नीच, छुआ छूत और दूसरों की दास्ता में जकड़ी क़ौम ने जब उसका एकता ,समानता पर आधारित प्यार भरा संदेश सुना तो उनका सीना भी पूरे ईमान से जगमगा उठा।

चौथा मर्कज़:—माला बार जिसे केरला कहा जाता है अरबी जुगराफिया लिखने वालों ने गुजरात से आगे और कोलम तक ही इलाका बताया है वहां भी इस्लाम अपनी सच्चाई और ईमानदारी की बुनियाद पर पहुंचा।

मालाबार में इस्लाम का अमृत भरा संदेश शेख शरफ बिन मालिक, उनके भाई मालिक बिन दीनार और भतीजे मालिक बिन हबीब के ज़रिये उस वक्त पहुंचा जब वो एक जमात के साथ हज़रते आदम अलैहिस्सलाम के क़दम की ज़ियारत के लिए श्रीलंका जा रहे थे। कुछ लोगों का कहना

है कि यह हस्तियां सहाबि ए रसूल थीं। जब वो करंगा नूर पहुंचे तो वहां के राजा ने उन्हें बुलावा भेजा। उनके ज़रिए इस्लाम का प्रेम भरा संदेश सुनकर उसके ह्दय में श्रद्धा के कमल मुस्कुराने लगे। इस्लाम की शिक्षा से प्रभावित होकर न केवल उसने इस्लाम स्वीकार किया बल्कि जब यह बुज़ुर्ग वापस लौटे तो वो भी उनके साथ अरब चला गया और वहां उसका इन्तेक़ाल हो गया। शायद यह भारत का पहला भाग्यशाली राजा था जो अरब की पवित्र धरती पर दफन हुआ। आखिरी समय उसने अपने उत्तराधिकारियों के नाम एक पत्र भी लिखा। जिसे लेकर शेख़ शरफ बिन मालिक दोबारा वहां पहुंचे तो उसके उत्तराधिकारियों ने हर्ष उल्लास उनका स्वागत किया। मालिक बिन हबीब की कोशिशों से क्वालम, मराई ,मंगलोर कंजर कोट वगैरा में इस्लाम बड़ी तेज़ी से फैला। मोपला कौम भी उन्हीं की कोशिशों से मुसलमान हुई।

इस सिलसिले में तोहफतुल मुजाहेदीन सफा 12 ता 26 .मुसलमान हिन्दुस्तान सफा 148. 149...हिन्दुस्तान में सात इस्लाम में इसकी तफसील देखी जा सकती है।

उधर ही के एक राजा चेरा मन पीरू मल भी इस्लाम स्वीकार कर राज पाट छोड़ हज को चला गया। कहते हैं कि वो भी वहीं जाकर इन्तक़ाल कर गया।

केरला के लोगो ने भी इस्लाम की शिक्षा से प्रभावित होकर उसे स्वीकार किया और कलाड़ी के महाराजा भी उसकी सुगंध से महेक उठे।

उत्तरी भारत में राजा जयपाल ने जब गज़नी पर विजय प्राप्त करने के लिए दुर्रे खैब्रर से लड़ाई की तो गज़नी के बादशाह सुबुगतगीन (366 ता 387 ही.) ने न केवल मुक़ाबला किया बल्कि जयपाल को मजबूरन उससे सुलह भी करनी पड़ी। मगर लाहौर पहुंचकर वो सुलह से मुकर गया।

हालांकि उसके दरबारियों ने उसे काफी समझाया मगर उसके बावजूद न सिर्फ उसने सुलह की खिलाफ वर्जी की बल्कि बादशाह के आदमियों को गिरफ्तार कर के क़ैदखाना भेजवा दिया। अपने आदमियो को छुड़ाने के लिए सुबुकतगीन को दूसरी बार उस पर हमला करना पड़ा जिस में सुबुकतगीन ने विजय प्राप्त कर के न सिर्फ अपने आदमियों को छुड़ाया बल्कि एक वादा खिलाफ राजा को हटाकर उसके ही संबंधी को गद्दी पर बैठा कर गजनी वापिस चला गया। यह पहला मौका था। जब मुसलमानों ने भारत पर हमला किया। वरना इससे पहले वो सिंध तक ही सीमित थे।

सनाम में पीर नबा नबवी का मज़ार है। हज़रत शरीफ जन्दनी जो सुबुकतगीन से पहले के बुजुर्ग हैं। पीर नबा नबवी को उनका खलीफा बताया जाता है। उससे पता चलता है कि बादशाह गज़नी के आने से पहले वहां इस्लाम पहुंच चुका था।

कुछ लोग अंग्रेज़ो द्वारा लिखा या लिखवाया गया झूठा इतिहास पढ़कर यह समझते हैं कि इस्लाम तलवार से फैला और भारतीयों ने दौलत के लोभी बनकर और अपनी आत्मा का खून करके इस्लाम स्वीकार किया। मगर इन राजाओं और महाराजाओं का इस्लाम स्वीकार करना बता रहा है कि वो इस्लाम ही है जिसकी पवित्रता, समानता पर आधारित प्यार भरा संदेश ही था जिसने तड़पती हुई मानवता, सिसकती हुई आदमियत, मरती हुई इंसानियत को नया जीवन देकर संसार में उसे सबसे ऊंची पदवी दी। यही कारण है कि लोगों ने कभी भी डर कर नहीं बल्कि उसे समझकर स्वीकार किया। यहां के बुद्धिंजीवियों ने इसकी समानता भरी शिक्षा देखी। इसके महान सिद्धांतों पर विचार किया। इसके पवित्र संदेश को पढ़ा। साथ ही साथ औलियाए केराम के जीवन

चरित्र संदेश को देखा। जिनकी बोलचाल, रहन–सहन में इस्लाम को चलता फिरता जीवित रूप से देखा, समझा और परखा। जिससे उनकी आत्मा झूमने लगी। उनके हृदय में उसकी महानता का चिराग जलने लगा। उनके दिमाग उसकी सुगंध से महकने लगे और वो स्वयं इस्लाम पर अर्पित होने के लिए व्याकुल हो उठे। जिस इस्लाम ने अपनी मधुरवाणी से तुर्किस्तान में, तातार में और मंगोलिया के मार्ग से चीन में प्रवेश किया। अपने कल्याणकारी कार्यो से कश्मीर से गुजर कर तिब्बत में आसान जमाया, अपने प्रेम भरे संदेश से बंगाल और असम तक बर्बाद होते हुए समाज को नया जीवन प्रदान किया। ऐसा गौरव शाली और शक्तिशाली धर्म को क्या जोर, ज़बरदस्ती, भय, लालच और डर से लोग स्वीकार करेगें। ? राजपूत कौम जो अपनी मान मर्यादा के लिए अपनी पत्नियों को आग के हवाले कर दें। क्षत्री कौम जो अपनी गर्व के लिए हर तरह का बलिदान देने को तैयार रहे। ब्राहमण जाति जो सदा से राज करती रही। क्या वो दौलत के लोभी बनकर और तलवार से भयभीत होकर इस्लाम की छत्रछाया स्वीकार करेंगे? वास्तविकता यह है कि इस्लामी संदेश में ही इतना प्रेम है और उसके सिद्धांतों में ही मुर्दा आत्माओं को जीवित करने की ऐसी शक्ति है कि लोगों के हृदय खुद उसकी चौखट पर श्रद्धांजलि अर्पित करने लगते हैं। (1) जहां पूरा देश इस्लाम के संदेश से प्रभावित हुआ। वहीं छत्तीसगढ़ की धरती भी उससे सुगंधित हो उठी।

---

(1)प्रोफेसर हिमायू कबीर की प्रसिद्व पुस्तक दी इण्डिया हेरी टीचं सफा 84 और बदरूल कादरी सा. हालैण्ड की महात्व पूर्ण पुस्तक मुसलमान और हिन्दुस्तान सफा 132 में इस संबन्ध में तफसीली रौशनी डाली गई है जो हर न्याय प्रिय के पढ़ने योग्य किताब है।

गोहम्मद अली

छत्तीसगढ़ और इस्लामः—

छत्तीसगढ़ जिसे गोंडवना भी कहा ज़ाता है बल्कि इतिहास तो यह कहता है कि यह नाम मुसलमानों का ही दिया हुआ है। प्रसिद्ध इतिहास कार प्यारेलाल गुप्ता प्राचीन छत्तीसगढ़ में लिखते हैं। द्राविड़ों का एक वर्ग गोड़ छत्तीसगढ़ में रहता आया है। अभी भी इस क्षेत्र में गोड़ों की जनसंख्या अधिक हैं आर्यों के प्रवेश के पहले जिस भाग में इनका राज्य था वह गोंडवाना कहलाता था। यद्वद्यपि पूरे छ,ग, को गोंडवाना नाम मुसलमानों ने दिया था। नागपुर में तो गोंडवाना क्लब तक खोल रखा गया है यद्यपि इसके सदस्य गोड़ोतर सज्जन हैं और जो अत्यन्त सम्माननीय दृष्टि से देखे जाते हैं। गोड़ों को अपनी स्वतंत्रता, सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा के लिए आर्यो से निरंतर टक्कर लेना पड़ता। (सफा 14)

डा. बलदेव प्रसाद मिश्रा ने अपनी पुस्तक छत्तीसगढ़ परिचय के पृष्ठ 2 पर भी यही दर्शाया है। मगर यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ के नाम से कैसे प्रसिद्ध हुआ इस संबंध में विद्वानों के कई मत हैं। कुछ विद्वानों का अनुमान हे कि 1493 के लगभग यह नाम प्रचार में आया। करन् इससे पहले इस क्षेत्र को दक्षिण कोंसल, सर्वत्रकोसल या महाकौसल कहा जाता था। यह भी कहा जाता है कि चेदी वंशी राजाओं के राज्य के कारण इसे चेदीश गढ़ कहा जाता था जो बिगड़ कर छत्तीसगढ़ हो गया। एक मत यह भी है कि रतनपुर के राजाओं ने 36 किलों पर राज्य किया। इसलिए वह देश छत्तीसगढ़ के नामे से प्रसिद्ध हुआ। (छत्तीसगढ़ का इतिहास स. 10)

साहित्य में खौरागढ़ राज्य के चारण कवि दल राम की रचना में यह शब्द पहली बार 1487 में प्रयोग किया गया।

लक्ष्मी निधिराम सुनो चित्तदै,गढ़ छत्तीस मे न गढ़ैया रही।
मरदुमी रही नहि मरदुन के, केर हिम्मत से न लड़ैया रही।
भय भाव भरे जन गांव र ह भय है नहिं जाय डरैया रही।
दलराम कहै सरकार सुना, न काई न ढाल अढ़ैया रही।

इसके अतिरिक्त खूब तमाशा में गोपाल मिश्र जो रतनपुर के कवि थे उन्होंने भी 1689 में इसका प्रयोग किया है।

छत्तीसगढ़ में मुसलमानों की आमदः— छत्तीसगढ़ में मुसलमान कब आए। सही तौर पर बताना बड़ा मुश्किल है। मगर इतना ज़रूर है कि यहां का मुसलमानों से बड़ा पुराना संबंध रहा है। भारत की धरती पर लगभग 800 वर्ष तक शासन करने के बावजूद यह क्षेत्र सदा ही मुस्लिम राज्य से दूर ही रहा। जिसका कारण शायद रहा हो कि देहली के बादशाहों का इस ओर कभी ध्यान ही नहीं गया और न ही यहां वालों ने उनके राज्य को कभी चुनौती दी। मगर बुजुर्गाने दीन के काफिले यहां आते रहे और उनके पवित्र चरणों से यहां इस्लाम की फुलवारी महेकती रही।

सय्यद मूसा शहीदः— इतिहास दृष्टिकोण से जो बात अभी तक सामने आई है वो यह कि बारहवीं शताब्दी में हज़रत सय्यद मूसा शहीद अपने फौजियों के साथ इधर तशरीफ लाए और रतनपुर के पास जूना शहर जो अब रतनपूर का एक मोहल्ला है वहां जंग करते हुए शहीद हुए। प्राचीन छत्तीसगढ़ के लेखक लिखते हैं।

रतनपुर के पूना शहर में मूसे खां की दरगाह है जहां अब कुछ वर्षों से मुसलमान उर्स मनाते हैं। इस संबंध में कप्तान जे,टी, ब्लंट ने जिसने अपनी यात्रा के बीच सन 1795 में रतनपुर में पांच दिनों का मुकाम किया था।

अपनी रिपोर्ट में लिखा है — दुलहारा तालाब के करीब पश्चिम की ओर एक मुस्लमान पीर की समाधि है जिसका

नाम मूसे खां था और जिसकी हत्या गोंड़ों ने कर दी थी। (सफा 115)

किंतु लेखक का कहना है कि यह अप्रमाणित है। मगर बुजुर्गों के कथन अनुसार आपका पूरा शरीर जूना शहर रतनपुर जिला बिलासपुर में है मगर सर का मज़ार वहां से लगभग 10 मीटर दूर आरंग में है जो रायपुर से लगभग छत्तीस कि.मी. बंबई कलकत्ता रोड पर है।

हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब फारूक़ी जिनकी सरपरस्ती में यह उर्स उनकी पूरी जिंदगी भर मनाया जाता रहा वो फरमाया करते थे कि सय्यद मसऊद गाजी सालार रहमतुल्लाह अलैह की फौज के एक हिस्से के आप सेनापति थे जो किसी तरह रास्ता भटक कर इधर आ पहुंचे और लड़ते हुए शहीद कर दिये गये। हज़रत मसऊद गाजी सालार (रहमतुल्लाह तआला अलैह) सुल्तान महमूद गज़नवी के भांजे थे जो बहराईच में लड़ते हुए भरी जावानी में 14 रजब 424 ही (10जुलाई 1033 ई.) को उन्नीस साल की उम्र में शहीद हुए। पूरे भारत में हर जगह आपका नाम लोग बड़ी श्रद्धा से लेते हैं। मशहूर मोहद्दिस हज़रत शेख अब्दुल हक मोहद्दिस देहलवी फरमाया हैं।

आपका मुबारक नाम सालार मसऊद है और देहली के अतराफ (आसपास) में पीरे पहलम,खोरासन (जो ईरान में एक शहर का नाम है) के इलाके में रजब सालार और बाज़ जगहों पर किया गाज़ी, बाले कियां, बाला पीर, हटीला पीर भी कहते हैं।

(खज़ीनतुल औलिया भाग–2सफा217
बहवाला मुसलमान और हिन्दुस्तान स, 204)

इधर कुछ सालों से हज़रत सय्यद मूसा शहीद की दरगाह रतनपुर में किसी ने एक बोर्ड लगा दिया जिसमें आप की शहादत 584 हि. (4 अप्रैल 1186 ई.) बताई गई है। जबकि हज़रत मसऊद गाज़ी सालार की तारीखें शहादत 424 हि. (1033 ई.) कई साल पहले भोपाल से वक्फ बोर्ड का कोई सरवेयर आया था। जिसने आपका नाम सय्यद अब्दुल लतीफ उर्फ सय्यद मूसा शहीद बताया। उसी से यह भी पता चला कि आप अस्फहान (ईरान) के रहने वाले थे। आप के साथियों की सामुहिक कब्रें दो जगह बताई जाती हैं। एक कब्र में 351 शोहदा दफन हैं जिसे गंजे शहीदाने कहा जाता है। दूसरी कब्र जो मज़ार शरीफ के पास है वहां 70 शोहदा अराम फरमां हैं। यह आप के एक दिन पहले शहीद हुए थे। आपके कुछ साथियों के नाम भी सरवेयर साहब के ज़रिये मालूम हुआ। जैसे सय्यद अफज़ल हुसैन वल्द सय्यद अब्दुल रहमान, सय्यद जमालुद्दीन, सय्यद अनवारूल हसन, सय्यद जमाल असगर वगैरा। यह सब सय्यद अफज़ल हुसैन साहब के भाई के भाई थे। मगर कोई किताबी या तहरीरी तस्दीक अभी तक मुझे नहीं मिल पाई। मगर इतना ज़रूर पता चलता है कि यह पहले क़ाबिले ज़िक हस्तियां हैं जिन्होंने इस इलाके में सबसे पहले इस्लाम का चिराग रौशन किया।

उनके दो सौ साल बाद खलीफा नाम किसी मिलेट्री नरल का नाम इतिहास में मिलता है जिसमें 1346 ई. में सरगुजा पर विजय प्राप्त कर तांबे का सिक्का चलवाय। तीसरा ज़िक फिरोज़ शाह तुगलक का मिलता है जिसने चौदहवीं सदी ईसवी में उड़ीसा से वापसी पर रायपुर में पड़ाव डाला। उसकी फौज के कुछ मुसलमान फौजी यहां रूक गए। फिर शेरशाह सूरी के समय भी कुछ मुसलमान इस क्षेत्र में पहुंचे।

बादशाह जहांगीर और छ.ग. :— 17वीं सदी में बादशाह जहांगीर के राज्यकाल में उसके लड़के परवेज़ का रतनपुर में हमले का जहांगीर नामा के ज़रिए मिलता है। प्राचीन छत्तीसगढ़ के लेखक लिखते हैं जब जहांगीर के पुत्र परवेज़ ने रतनपुर पर हमला करने के लिए अपने एक सेनापति को भेजा तब तत्कालीन राजा कल्याणराय ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। फलतः परवेज़ ने राजा को एक लाख रूपया 80 हाथी तथा स्वर्ण मुहरे लेकर दिल्ली चलने के लिए विवश किया। इसकी सूचना जब राजा कल्याण राय की माता भवानामती को मिली, तब वो बहुत घबरा गई। उसने सोचा कि मेरा पुत्र दिल्ली में इस्लाम मज़हब स्वीकार करने के लिए अवश्य मजबूर किया जाएगा। देवार गीत में इसका उल्लेख इस प्रकार है।

रानी कहे भवानामती,सुन बेटा मोर बात,
मूड़ रूड़ाय पठान बना हे अउ पढ़ा हे नेवाज़
कनचीर मुंदरी पहिर है कर मुगलानी भेख
तै पाइके राजा मन ढिल्ली न इ जावे जी (स.231)

मां के समझाने के बावजूद राजा कल्याण राय शहज़ादा परवेज़ के साथ दिल्ली चला गया। उस वक्त उसके साथ कई राज्यों के 22 आश्रित राजा और 18 राजकुमार भी थे। वहां पहुंच कर बादशाह जहांगीर ने उसे मज़हब बदलने पर मजबूर करने के बजाए उसे एक राजा का सम्मान दिया और वापसी पर अपने शहाना रसम वो रिवाज और प्रथा के अनुसार खिल्लात (शाही इमाम) आदि से भी नवाजा।

यहां यह हक़ीक़त भी समझते चलिये कि मुगल बादशाहों ने बल्कि किसी भी मुस्लिम बादशाह ने इस्लाम को फैलाने में कभी ज़ोर ज़बरदस्ती और लाठी डंडे का इस्तेमाल नहीं

किया। इस्लाम जब भी फैला यह अपनी प्रेम भरा संदेश से फैला और आज भी दुनिया के विभिन्न स्थानों में इसी बुनियाद पर बढ़ रहा है।

मुगल बादशाह बाबर की वसीयत सारा संसार जानता है कि जिसमें उसने अपने बेटे हुमायूं को गाय की कुर्बानी से मना किया था ताकि देश पर ही नहीं बल्कि प्रजा के दिलों पर भी उसका राज्य चलता रहे। यही कारण है कि अंग्रेजों से पहले भारत में कभी हिन्दु मुस्लिम दंगा नहीं हुआ। दोनों मिलकर सदा बादशाहों से प्रेम करते रहे और बादशाह भी सभी के दुख–सुख में भागीदारी बने रहे। यही वो एकता और प्रेम था जिसका यह परिणाम था कि जब अंग्रेजों के खिलाफ सारा हिंदुस्तान उठ खड़ा हुआ उस वक्त मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फर को सभी ने दिल्ली के तख्त पर बैठाकर तोपों की सलामी दी और उनकी संरक्षता में1857 ई.की जंगेआज़ादी लड़ी। (1)

मराठा राज्यः—बादशाह जहांगीर के बाद 1737 ई. में बिंभाजी भोंसले के राजा बनते ही छत्तीसगढ़ में मुसलमानों की आमद तेजी से बढ़ती चली गई। जिसका विशेष कारण यह था कि मुसलमान अपनी हुकूमत के सदा वफादार रहे। यही वजह थी कि भोंसले ने फौज मेंमुसलमान को तरक्की दी। उन्हें आगे बढ़ाया और उन पर ज़्यादा से ज़्यादा भरोसा किया। बिंभाजी की फौज में

तफसील के लिये देखें

(1) डॉ. सबीहा यासमीन खां की थिसेस Development of islamic institutions in chhatisgarh

(2) Memoirs of jahangir by rodgers and beverdge

अली करावल खॉं, शाह मोहम्मद खॉं और सुब्हान जी विशेष महत्व रखते थे। (तारीखे नागपुर) फौज में मत्वपूर्ण स्थानों पर मुसलमानों की भर्ती का एक कारण उनकी बहादुरी और वीरता भी थी। बिंमाजी के बाद राजा रघु जी प्रथम (1698 से 1755 ई.) तक ने 1714 तक उड़ीसा के सुबेदार मीर हबीब के कहने पयर बंगाल के नवाब अली वर्दी खॉं पर हमला किया। ;छत्तीसगढ़ का इतिहास; के लेखक आचार्य रमेंद्रनाथ मिश्र लिखते हैं। मराठों ने ई. 1742 में बंगाल को लूटने के लिए कूच किया। रास्ते में रतनपुर का राज्य पड़ा। भास्कर पंत वहां के राजा रघुनाथ सिंह को हरा कर और उसकी जगह उसी के संबंधी मोहन सिंह को सौंपकर आगे बढ़ा। (सफा 21)

इस तरह सात शताब्दी से ज़्यादा कलचुरी राज्य समाप्ति पर पहुंचा गया। रतनपुर जिसे रतन देव ने बसाया था और छ.ग. की राजधानी बनाया था अब धीरे—धीरे मराठों के अधिकार में चला गया यहां तक कि 1757 में प्लासी के दौरान में जहां भारत के भाग्य का फैसला हुआ वहीं छ.ग. के राजनैतिक भाग्य का फैसला हुआ मराठों के हक में हुआ। जिन्होंने रघुनाथ सिंह को हटाकर मोहन सिंह को पहले गद्दी में बैठाया और फिर 1757 में उसे निकाल भगाया। दूसरी तरफ उसके लड़के शिवराज सिंह से भी 1757 में जागीर छीन कर अपने राज्य का उसे एक भाग बनाकर बिंबाजी भोंसले शासन चलाने रतनपुर आया।

जिस समय भास्कर पंथ ने बंगाल की तरफ मार्च किया और रतनपुर पर विजय प्राप्त की उस मौके पर उसके साथ जो मुस्लिम फौज थी लगता है कि हज़रत बाबा इंसान अली के पूर्वज उसी मौके पर छ.ग. में तशरीफ लाए होंगें। जिस पर तफसीली गुफ्तगू में हज़रत के जीवनी ताजदारे

छत्तीसगढ़ में की है।

इलाके क मुसलमानों की तारीख का दूसरा दौर जंग आजादी से शुरू होता है जिसमें पूरे भारत के साथ–साथ इस क्षेत्र के मुसलमानों की कुर्बानियों और बलिदानों ने एक नया इतिहास रचा और अपने खून से मादरे वतन की मांग में सेंदूर भरा। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए वो चिराग़ जलाया जिस के मधुर प्रकाश में आने वाले मुजाहेदिन ने इस क्षेत्र में इन्क़ेलाब जिंदाबाद आज़ादी हमारा पैदाईशी हक का नारा लगाकर अंग्रेजों को बोरिया बिस्तर बांधने पर मजबूर कर दिया।

1757 में कुछ लोगों की गद्दारी और अंग्रेजों की मक्कारी से बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की शहादत के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के क़दम भारत पर जमने लगे। फिर धीरे–धीरे भारत को गुलाम बनाने का शैतनी प्लान लेकर अंग्रेज़ पूरे भारत पर छाते चले गये यहां तक की शेरे दक्षिण टीपू सुल्तान की 1799 ई. में शहादत से पूरे भारत पर राज्य करने का उनका शैतानी सपना हक़ीक़त का रूप लेने लगा। जब तक टीपू सुल्तान ज़िन्दा रहे। भारत को गुलाम बनाने की अंग्रेज कल्पना भी नहीं कर सकते थे। इधर टीपू सुल्तान शहीद हुए उधर जनरल हीरस ने शैतानी कह (राक्षसी ठहाका) लगाते हुए कहा " अब भारत हमारा है।"

शहंशाह औरंगजेब (1707) की जिंदगी तक तो अंग्रेज भारत पर क़दम रखते हुए घबराते थे और टीपू सुल्तान की ज़िन्दगी में इसे गुलाम बनाते हुए वो डरते थे। मगर उन्हें क्या खबर थी कि टीपू सुल्तान आजादी का जो चिराग जला गए उसे जनरल हीरस का शैतानी कहकहा ही नहीं बल्कि इंग्लैंड की पूरी शक्ति भी मिलकर बुझा न

सकेगी। इतिहास साक्षी है कि टीपु सुल्तान की शहादत से उसकी रौशनी इतनी तेज़ी से बढ़ने लगी कि 1857 में आखरी मुगलिया ताजदार बहादुर शाह ज़फर की सरपरस्ती में पूरा भारत आज़ादी के लिए उठ खड़ा हुआ। उस मौके पर सारे भारत के साथ–साथ हमारा छत्तीसगढ़ का यह इलाक़ा भी मैदाने जंग में कूद पड़ा।

अगरचे यहां मुसलमानों की तादाद बहुत कम थी मगर फिर भी वो सर पर कफन बांध कर देश की आज़ादी के लिए सब कुछ कुर्बान करने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़े हुए। जिनमें सय्यद अकबर हुसैन खाँ(अस्पताल वाले बाबा) गाज़ी खां हवलदार, अब्दुल हयात खां गोला अन्दाज़ और नूर मोहम्मद गोला अन्दाज़ वगैरा का नाम क़ाबिले ज़िक्र है। जिन्हों ने अपनी जान की परवाह किये बगैर तीसरी टुकड़ी के सार्जेंट मेजर डिल विल को कत्ल करके और 22 जनवरी 1885 को फांसी के फंदों पर झूल कर आने वाले मुजाहेदीन को न टूटने वाला हौसला दे गए जिसने आजादी का नया इतिहास रचा। सय्यद अकबर हुसैन वल्द सय्यद हैदर हुसैन जो अस्पताल वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध है जिन्हें वक्फ बोर्ड सरवेयर मुंशी महरूद्दीन सा. ने बिला तसदीक़ बंदे अली शाह लिखवा दिया। आज भी हजारों मरीजों को आप के मज़ार से तंदुरूस्ती मिल रही है। आप के नाना मीर हशिम अली के बारे में कहा जाता है कि वो रेवाड़ी (हरियाणा पंजाब) से किसी फौज के साथ देहली होते हुए काला हांडी (भवानी पटना उड़ीसा) पहुंचे और वहीं एक जंग में शहीद हो गए। सय्यद अकबर हुसैन (अस्पताल वाले बाबा) को मेजर सिड विल के क़त्ल के जुर्म में जहां फांसी का हुक्म हुआ वहीं आप के रिश्तेदारों को भी खुसूसन सय्यद नजफ अली और सय्यद याकूब अली को सख्त परेशान किया गया। मगर आजादी के वोह मतवाले अंग्रेजों के हर जुल्म वो सितम और अत्याचारों

का मुजाहिद बनकर मुक़ाबला करते रहे। हज़रत सय्यद अकबर हुसैन को जब खानदान वालों पर ढाए गए जुल्मों वो सितक की खबर लगी तो आप ने न सिर्फ उन की हिम्मत बढ़ाई बल्कि मादरे वतन की हिफाज़त और अंग्रेज़ों की गुलामी से रेहाई के लिए सब कुछ कुर्बान कर देने की नसीहत भी की। आप के फांसी का जब वक्त आया तो आप ने तीन वसीयत की जिस में पहली वसीयत यह थी कि मेरी लाश को कोई काफिर हाथ न लगाए। दूसरी वसीयत में आप ने जहां आज मजार है उसी जगह दफन करने के बारे में फरमाया और तीसरी वसीयत में उन रिश्तेदारों को छोड़ने के बारे में कहा जिन्हें अंग्रेज़ अपने जुल्मों सितम का निशाना बना रहे थे।

आज आप का जिस जगह मज़ार है वो इलाक़ा उस वक्त वीरान खंडहर पड़ा उजाड़ था मगर वहां दफन के बारे में एक दफा लोगों ने हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब फारूक़ी से पूछा तो आप ने फरमाया कि अल्लाह वालों पर खुदाई फैज़ान होना आम बात है। हज़रत बाबा को मालूम था कि एक दिन यह इलाक़ा आबाद होगा और हज़ारों लोग दिन रात फयूज़ वो बर्कात लेने यहां हाज़िर होंगे। इसलिए आप ने वो जगह पसंद फरमाई। ताकि हर आने वाले को ज़्यादा आसानी हो।

हज़रत बाबा और उनके साथियों ने आज़ादी का जो चिराग जलाया वो फांसी के फंदे में पहुंचकर इस तरह भड़का कि पूरा छत्तीसगढ़ में मुसलमानों की तादाद इंतेहाई कम होने के हर जगह उन्होंने अंग्रेजों का न सिर्फ मुक़ाबला किया बल्कि आज़ादी के बुझते हुये चिराग को भी वो अपने खून से जलाते रहे। 1919 ई. में जब हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब किब्ला फारूक़ी अलैहिर्रमा इधर तशरीफ लाए तो तालीमी और मज़हबी एतेबार से यहां के मुलमानों की

हालत इन्तेहाई खराब थी। दूर–दूर तक कहीं इल्म का कोई दीप भी नहीं था जो लोगों में ईमानी बेदारी लाता और इस्लामी जज़्बा बेदार रखता यहां तक कि कहीं कहीं जेहालत का अंधेरा इतना घना हो चुका था कि दूर–दूर तक नमाज़े जनाजा पढ़ाने वाला भी नज़र नहीं आ रहा था जिस की वजह से नमाज़ पढ़े बगैर मुर्दे को दफन कर दिया जाता। मगर इसके बावजूद अंग्रेजों से नफ़रत और आज़ादी की तड़प का जज्बा हर मुसलमान के दिल में लहरें मार रहा था।

अंग्रेजों ने जहां बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और शेरे दकिन टीपू सुल्तान को मरवा कर मुसलमानों पर अत्याचार का पहाड़ तोड़ना शुरू किया वहीं उन्हें इस्लाम से दूर करने के लिए श्रद्धानन्द सरस्वती कि ज़रिये शुद्धि आंदोलन चला कर उन्हें हमेशा के लिए खत्म करने का भी भ्यानक और खतरनाक मंसूबा बनाया।

एक तरफ अंग्रेज़ो के जुल्म वो सितम और भयानक अत्यचार का उमड़ता हूआ तूफान। दूसरी तरफ दीन और ईमान को बर्बाद करने बाला शुद्धी आंदोलन की उठती हुई भयानक आंधी तीसरी तरफ पूरे इलाके में दीनी वो इल्मी मैदान में जेहालत का बढ़ता हुआ अंधेरा। उस पर यह तमाशा अलग कि गैर मुस्लिमों की संगत और दोस्ती की वजह से मुस्लिमीन रसम वो रिवाज। जिसमें यहां का बंधा हुआ मुसलमान दिन ब दिन इस्लाम से दूर होता जा रहा था। मगर खुदा की रहमत जोश में आई। उसके नेक बन्दों की दुआओं ने असर दिखाया और सुल्तानुल हिन्द ख्वाजा गरीब नवाज़ रदिअल्लाहो तआला अन्हो के खामोश ईशारे पर आला हज़रत फाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा के फयोज़ वो बर्कात की दौलते लाज़वाल लिये हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद

अली फारूक़ी अलैहिर्रहमा यहां तशरीफ लाते हैं और गांव से लेकर शहर तक, जंगल से लेकर बस्ती तक पहाड़ो और गांव से लेकर आबादी तक हर जगह पहुंच कर न सिर्फ ईमानी बेदारी का नया दौर शुरू करते हैं बल्कि ईस्लाम दुश्मन ताक़तों के ज़रिये अंधेरगर्दी मचाती शुद्धी आंदोलन का जबरदस्त मुकाबला करते हुए अंग्रेज़ो के खिलाफ ऐसा माहौल बनाते हैं कि घर–घर आजादी का दीप जलने लगता है। पूरा इलाक़ा अंग्रेज़ो के खिलाफ उठ खड़ा होता है। आपकी मुजाहिदाना ललकार और इस्लामी किरदार से जहां मुसलमानों में एक नई जिंदगी अंगड़ाई लेने लगी वहीं इस्लाम दुश्मन ताकतें भी घबरा उठीं। देखते ही देखते अंग्रेज़ों के क़दम उखड़ने लगे। शुद्धी आंदोलन का तूफान भटकने लगा। ईमानी जाह वो जलाल और इस्लामी किरदार वो अमल ने मुसलमानों को नया हौसला दिया। उन के मुर्दा दिलों में नई ज़िन्दगी मुस्कुराने लगीं। अंग्रेज़ो की सारी साजिशें नाकाम होने लगीं। साथ ही साथ हर जगह बगावत का तूफान उमड़ने लगा। जिससे घबराकर 19 जुलाई 1922 ई. को बगावत के जुर्म में आपको जेल भेज दिया गया। मगर आपने वहां भी अपना मिशन इस अंदाज़ से क़ायम रखा कि जेल की अंधेरी कोठरियां भी ईमान के मधुर प्रकाशित हो उठीं और वहां रहने वालों के दिलों में भी अज़मते इस्लाम की आकाश गंगा का मधुर प्रकाश बिखरने लगा। कैद में ज़िदगी गुज़ारने वाले न सिर्फ दीन के मुजाहिद और इस्लाम के गाज़ी बन गए बल्कि उनकी ज़िदगी इश्के रसूल के सांचे में ढल कर दूसरों के लिए रौशनी का मीनार बन गई। जिसकी रौशनी में समाज आगे बढ़ने लगा। यहां तक कि बहुत से गैर मुस्लिमों के हृदय भी इस्लाम की सुगंध से सुगंधित होने लगा और उनकी जुबानों

से भी कल्म ए तौहीद का झरना फूट पड़ा।

जेल से छूटकर आपने पूरी क़ौम को जोशे हुसैनी और जज़्बाए शब्बीरी से सरशार करने के लिए मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर म. प्र. की बुनियाद डाली जिसने पूरे इलाके को मदीने से और करीब कर दिया। फिर जैसे जैसे यहां के लोग मदीन ए मुनव्वर से करीब होते गए वैसे–वैसे मध्य भारत का यह पिछड़ा इलाका नया–नया इतिहास रचने लगा। इश्क वो इर्फान का इतिहास, तालीम वो तर्बियत का इतिहास सरफ़रोशाना और मुजाहिदाना किरदार का इतिहास। मादरे वतन से मोहब्बत और इस्लाम से वफ़ादारी इतिहास। ऐसा इतिहास जिसने छत्तीसगढ़ से मदीने का फ़ासला ही मिटा दिया हर घर में मदीने की तजल्लियात मुस्कुराने लगीं और हर दिल में इश्के रसूल का चिराग़ जलने लगा।

क़ौमे ख्वाबीदा को जिस ने कर दिया बेदार ।
तासीर थी वो एक मर्द मुजाहिद की अज़ाब में।।
कांप उठे ऐलाने बातिल न अ र ए तकबीर से।
थी वो कुव्वत मोहसिने मिल्लत की ज़बां में।।

मोहसिने मिल्लत एकेडमी की हिन्दी तारीख साज़ किताबे

1. ज़लज़ला — अज — अल्लामा अर्शदुल कादरी
   — हिन्दी मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
2. पंज सूरए रज़विया— मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
3. तबलीगी जमात — अज —अल्लामा अर्शदुल कादरी
   हिन्दी मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
4. आशिके रसूल (इमाम अहमद रज़ा) —
   अज़ प्रोफ़ेसर मसऊद अहमद सा. (पाकिस्तान)
   हिन्दी मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
5. पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश —
   मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
6. ताजदारे छत्तीसगढ़ — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
7. कुत्बे राजगांगपुर — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
8. ताजुल औलिया — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
9. रायपुर की बहार — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
   (बंजारी वाले बाबा)
10. तज़किरए बुर्हाने मिल्लत — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
11. इस्लाम और मोआशिरा — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
12. तबलीगी जमात और इस्लाम — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
13. बाबरी मस्जिद (तारीख के आईने में) —
    मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
14. बारह महीने की मुकद्दस दुआएं — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
15. हज की दुआएं — मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

ख़लीफ़-ए-आला हज़रत, मोहसिने मिल्लत,
अश्शाह हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ्ती
मोहम्मद हामिद अली फ़ारूक़ी
रहमतुल्लाह अलैह की क़ायम कर्दा
क़ायम शुदा: 1924
तारीख़साज़ इमारत
मदरसा इस्लाहुल मूस्लेमीन व दारूल यतामा
बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.)